भारतीय संगीत एवं संस्कृति

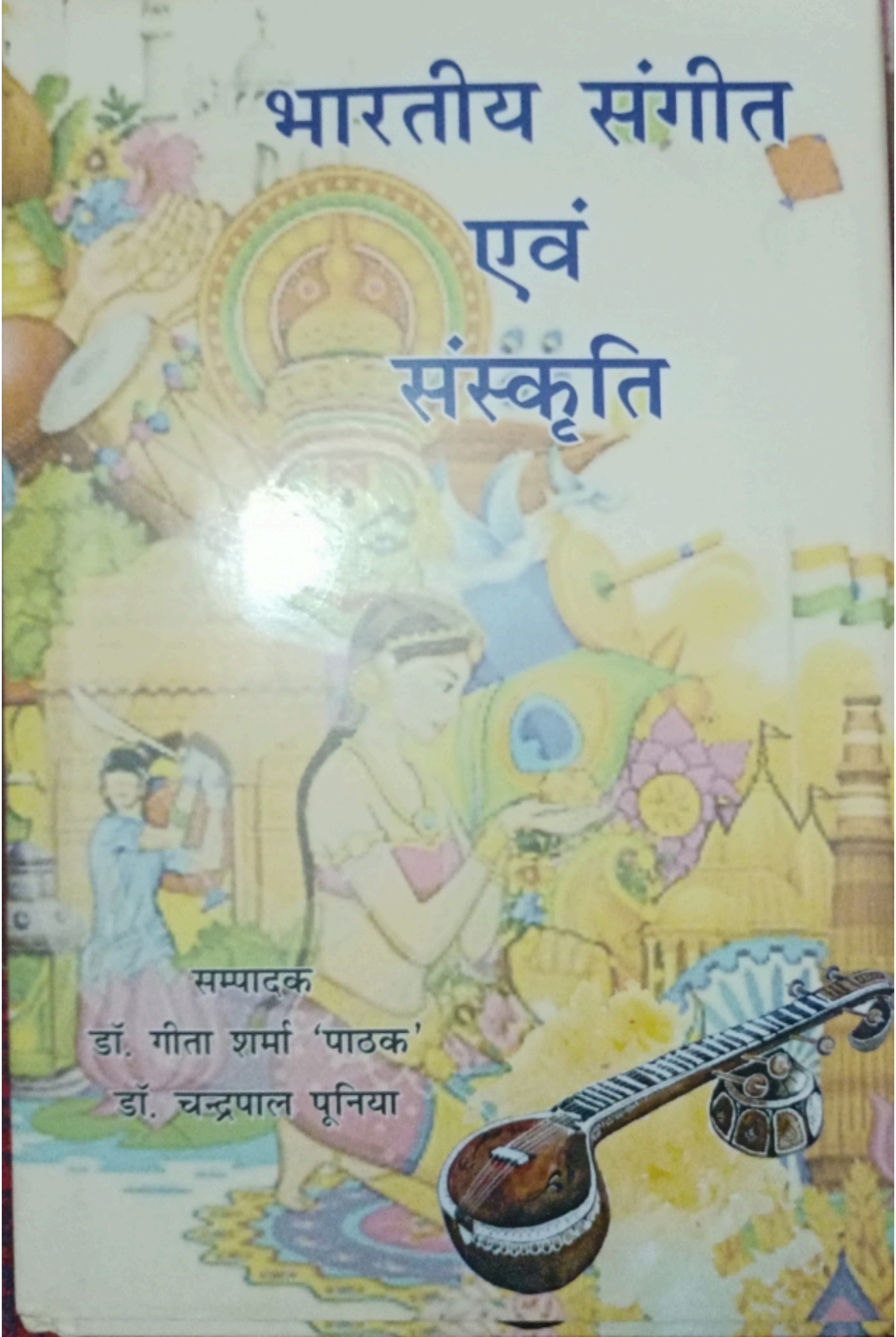

सम्पादक
डॉ. गीता शर्मा 'पाठक'
डॉ. चन्द्रपाल पूनिया

मनुष्य पृथ्वी पर ईश्वर की सबसे अनूठी कृति है और उसने अपनी उपस्थिति को अनेक माधुर्य और लालित्य के रूप में संगीत, कला, संस्कृति और सभ्यता के माध्यम से सार्थक दर्पण के रूप में स्थापित किया है। संगीत, कला और सभ्यता संस्कृति का एक ऐसा सा दृश्य प्रतिबिम्ब है, जिसकी छटा व्यक्ति के व्यवहार और भावों में झलकती है। संगीत और सभ्यता का उद्भव इस धरा पर अन्नत काल से है, जिसके माध्यम से अनेक नूतन क्षेत्रों का उत्थान हुआ है, जो सभ्य और आदर्श समाज की आधारशिला है।

भारतीय संगीत और सभ्यता का स्वरूप क्रियात्मक एवं मोहक प्रवृत्ति का है जो सभी को आन्नदमयी वात्सल्य और शालीनता से आकर्षित करता है। इन दोनों का आपसी सान्निध्य भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित रूप प्रदान करता है। मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत विद्यमान है। संगीत, संचार और सम्प्रेषण का एक महत्वपूर्ण साधन भी है जो आगन्तुकों के लिए एक आदर्श मार्ग प्रशस्त करता है।

वर्तमान समय में आम जनमानस को भारतीय संगीत और सभ्यता के आकृष्ठ करना इस पुस्तक का मूल उद्देश्य है। इस पुस्तक में अनेक ऐसे अनुभवी विद्वानों और प्रेरक व्यक्तित्व के विचारों का संग्रह है, जो समाज में संगीत और संस्कृति के प्रति सकारात्मक और सृजनात्मक स्वरूप को स्थापित करने में कुशल योगदान प्रदान करेंगे।

₹ 795

आर्यन पब्लिकेशन
110, गली नं. 4, हरफूल विहार,
बापरौला, नई दिल्ली-110043
फोन : 9891896483
ईमेल: aryanpublication12@gmail.com

ISBN 978-93-86695-32-1
9 789386 695321

9

सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

डा. भारती

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और संचार करना उसकी प्रकृति है। अपने भावों व विचारों का आदान–प्रदान करना उसकी जन्मजात प्रकृति है।

संचार की परिभाषा :–कम्यूनिकेशन शब्द लैटिन भाषा के कम्युनिस से बना है जिसका अर्थ है To Impart, make common मन के विचारों व भावों का आदान प्रदान करना अथवा विचारों को सर्वमान्य बनाकर दूसरों के साथ बाँटना ही संचार है। संचार शब्द, अंग्रेज़ी भाषा के शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका विकास Commune शब्द से हुआ है। जिसका अर्थ है आदान–प्रदान अर्थात् बाँटना।

किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुँचाना ही संचार या कम्यूनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों–करोड़ों लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार कहलाता है। मानव

सहायक प्रोफेसर, संगीत (वादन), राजकीय महिला महाविद्यालय, करनाल

सम्यता के विकास में संचार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ... सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य किसी न किसी रूप में ... करता रहा है।

प्राचीन समय में राजा के संदेशवाहक पैदल या घोड़े की ... करते हुए राजा के संदेश को एक राजधानी से दूसरी राजधानी ... पहुँचाते थे तथा उनके संदेश को वहाँ से लेकर आते थे। प्राची... कहानियों में यह सुनते भी रहे हैं कि लोग कबूतर के जरिए संदेश ... करते थे और वर्तमान समय में यही व्यवस्था सरकारी डाक–विभा... बनाकर सभी के लिए सुलभ कर दी गई। अब हर व्यक्ति एक निश्चि... शुल्क देकर अपना संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी ... भेज सकता है। आजकल फैक्स, ई–मेल के जरिए तो पलक झपकते ... सूचनाओं का आदान–प्रदान किया जा सकता है।

संचार का अर्थ सिर्फ व्यक्ति का अपना हाल–चाल समाचा... दूसरों तक पहुँचाने तक सीमित नहीं है। हर व्यक्ति अपने सगे सम्बन्धि... की सूचना जानने के अतिरिक्त देश–विदेश की खबरों को जानने में ... इच्छुक होता है। उदाहरणतयः आप आज की ही स्थिति को ले तो ... महामारी करोना वायरस की जानकारी जैसे कितने लोग प्रभावित है ... कितनों की जान चली गई, किन–किन देशों के आपस में कैसे सम्बन्ध है ... कहीं युद्ध की स्थिति है, मौसम की जानकारी, शिक्षा सम्बन्धी क्षेत्रों में हो ... रहे प्रयोगों के बारे में नई तकनीक की जानकारी में अखबार, रेडियो ... दूरदर्शन, मोबाईल, ईन्टरनेट जैसे जनसंचार के माध्यम काफी मददगार ... सिद्ध हो रहे है। वर्तमान समय में संचार के माध्यमों ने इतना विकास कर ... लिया है कि जल्द से जल्द सूचनाएँ पहुँचाने की दुनियाँ भर में होड लगी ... हुई है। पहले निर्धारित समय पर और एक निश्चित समय के लिए समाचारों ... का प्रसारण हुआ करता था, परन्तु आज चौबीस घण्टे देश दुनिया की ... खबरों का प्रसारण लगातार दूरदर्शन के चैनलों में चलते रहते हैं।

संचार माध्यम का मुख्य उद्देश्य सूचनाएँ पहुँचाना होता है लेकिन जब आप रेडियों सुनते है या टेलीविजन देखते है तो उसमें कार्यक्रमों का बहुत बड़ा हिस्सा मनोरंजन को ध्यान में रखकर प्रसारित किया जाता है,

विचार करें रेडियों में दिन भर अगर समाचार प्रसारित किए जाये तो जनता कितनी देर तक सुनेगी इसके विपरित अगर संगीत सम्बन्धित गीतों का प्रोग्राम प्रसारित करें तो कभी ना कभी ऐसा जरुर महसूस होगा कि काश समाचार प्रसारित किया जाता तो कितना अच्छा होता क्योंकि जनता केवल एक मात्र प्रोग्राम सुनने की अपेक्षा बाकी क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने में ज्यादा इच्छुक होगी।

वर्तमान समय में टैक्नॉलजी का इतना विकास हो चुका है कि टेलीविज़न पर विभिन्न चैनल शुरू हो गए है। व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अपनी पसन्द के चैनल को देख सकते है तथा जानकारी प्राप्त कर सकते है। संचार के माध्यमों द्वारा जनता को विभिन्न प्रकार की सामाजिक बातों के प्रति जागरूक किया जाता है जैसे जनसंख्या नियन्त्रण, बालविवाह के कुप्रभाव, एड्स के प्रति जागरूकता, नशे से समाज एवं मानव स्वास्थ्य पर पडने वाले प्रभाव, पर्यावरण, प्रदूषण, जल संचय आदि समस्याओं के प्रति सचेत किया जाता है। संचार के माध्यम सूचनाओं का एक सशक्त माध्यम है।

संचार के माध्यम कितने प्रकार के हैं तथा संचार के माध्यमों द्वारा मानव चेतना पर कैसे प्रभाव पड़ता है। संगीत के माध्यम से बताना चाहूँगी। आमतौर पर हम अखबार पढते है, रेडियों सुनते है और टेलीविजन देखते है। ये सभी सचार के माध्यम है। संचार के माध्यमों द्वारा संगीत से सम्बन्धित जानकारियाँ कैसे प्राप्त की जाती है उनके बारे मे बताते है। संगीत के क्षेत्र में संचार के माध्यम किस प्रकार प्रभाव डालते है इस विषय पर बात करते है। संगीत में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के दृश्य–श्रव्य साधनों को तीन वर्गो में बाँटा जा सकता है–

1. दृश्य माध्यम
2. श्रव्य माध्यम
3. दृश्य–श्रव्य माध्यम

1. दृश्य माध्यम :– इस माध्यम के अन्तर्गत जो माध्यम आते है वो संगीत शिक्षा एवं संगीत की जानकारी देने का एक सशक्त जरिया

है और मानव के मानसिक पटल पर इसका प्रभाव शीघ्रता से पड़ता है। दृश्य माध्यम के मुख्य स्त्रोतों में श्यामपट्ट, चित्र, मानचित्र, चार्ट, मॉडल, स्लाइड, फिल्म पट्टियाँ (रीलस) , अखबार आदि आते हैं। ये आसानी से उपलब्ध हो जाते है। जैसे किसी भी गाने की धुन, स्वरलिपि, मात्रा, ताल, राग का परिचय श्याम पट्ट पर लिख सकते है जिससे उन्हें सीखने में आसानी होती है इसी तरह विज्ञप्ति पट होता है। जिस पर सांगीतिक चित्रों, संगीत सम्बन्धी पत्रिकाओं व समाचार पत्रों की कटिंग लगाई जाती है जिससे बच्चों को संगीत से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त होती है।

इसी प्रकार चार्ट और मॉडल के द्वारा हम बच्चों को विभिन्न वाद्ययन्त्रों का ज्ञान एवं गायन वादन समय, जातियों, स्वरलिपि की बेसिक शिक्षा दे सकते है। संगीत वादन में सभी प्रकार के वादनों का होना संभव नहीं होता इसलिए मॉडल या चित्र के माध्यम से वाद्य के बारे में सम्पूर्ण जानकारी दे सकते है। इसी प्रकार मुद्रित माध्यमों अर्थात् समाचार पत्र, संगीत पत्रिकाता एवं किताबों में विभिन्न प्रकार के आलेख छपते है जिससे हमारा संगीत सम्बन्धित ज्ञान बढ़ता है जैसे किसी प्रान्त की सामाजिक, सांस्कृतिक, नृत्य, वाद्य, रहन सहन, खानपान का ज्ञान मिलता है। मुद्रित माध्यम के द्वारा ही हम घर बैठे ही दूसरे देशों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इन माध्यमों के द्वारा संगीत विषय ही नहीं बल्कि सभी विषयों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर सकते है।

2. श्रव्य माध्यम :–श्रव्य माध्यम सूचना के प्रसारण का एक सशक्त माध्यम है, जिसे सिर्फ सुना जा सकता है। अधिकांश लोग जो पढ़ना लिखना नहीं जानते वह श्रव्य माध्यम से सुनकर लाभ उठा सकते है। रेड़ियों एक श्रव्य माध्यम है जिसमें समाचार, विज्ञापन और सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है। इसके अतिरिक्त रेड़ियों के माध्यम से हम संगीत सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त कर सकते है। संगीत गायन हो या वादन, लोक संगीत हो या सुगम संगीत या शास्त्रीय सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे संगीत सुधा, संगीत सरिता, स्वर सुधा इत्यादि कार्यक्रमों को नियमित रूप से सुनने के लिए छात्रों को प्रेरित कर सकते है। इस माध्यम के द्वारा छात्र ही नहीं बल्कि आम नागरिक भी शास्त्रीय संगीत

का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में फिल्म संगीत से सम्बन्धित जानकारी भी दी जाती है। साथ ही साथ संगीतज्ञों का वादन, उनसे भेटवार्ताएँ, संगीत संगोष्ठियों की जानकारी भी प्राप्त कर सकते है। विभिन्न प्रान्तों के लोकसंगीत के साथ विदेशी संगीत की भी जानकारी प्राप्त होती है। रेडियों के अतिरिक्त श्रव्य माध्यम के रूप में टेपरिकार्डर का अपना महत्व है इसमें सूचनाओं को रिकार्ड करके रखा जाता है। चुनावों के समय राजनीतिक पार्टियाँ अपने प्रचार प्रसार के लिए इसका उपयोग करती है। कई कम्पनियाँ अपने विज्ञापनों का प्रसारण इसके माध्यम से करती है। लाउडस्पीकर भी जनसंचार के लिए उपयोगी माध्यम है। इसके जरिए कस्बों में कोई सूचना इत्यादि देनी हो तो उसमें इसका उपयोग किया जाता है। हाल ही में करोना वायरस जैसी महामारी में हमारे करोना योद्धा अर्थात् सुरक्षा कर्मियों ने महामारी से बचने के लिए लोगों को घरों में रहने की सूचना निरन्तर लाउडस्पीकर के द्वारा ही दी तथा कुछ सुरक्षा कर्मियों ने गीतों को गाकर उनका उत्साह बढ़ाया तथा मनोरंजन भी किया।

3. दृश्य श्रव्य माध्यम :– दृश्य श्रव्य माध्यम जनसंचार का उपयोगी माध्यम है इसके जरिए न सिर्फ कार्यक्रमों को सुना जा सकता है बल्कि घटनाओं को चित्र के रूप में भी देखा जा सकता है। टेलीविजन, एल.सी.डी., एल.ई.डी. दृश्य श्रव्य माध्यम है। इसके प्रोग्राम या कार्यक्रम रेडियों की अपेक्षा अधिक रोचक होते है क्योंकि इसपर चित्र को हम सुनने के साथ–साथ देख भी सकते है क्योंकि दृश्य सामग्री का उपयोग इसमें किया जाता है। टेलीविज़न पर विभिन्न चैनलों पर विभिन्न प्रकार के प्रोग्रामों को प्रसारित किया जाता है। जिन बातों को हम सुनकर या पढकर आसानी से समझ नहीं पाते उन्हें देखकर आसानी से समझ सकते हैं।

टेलीविज़न पर विभिन्न चैनल्स के प्रसारण के कारण आज यह महत्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में विकसित हो चुका है। चौबीस घण्टे इसका प्रसारण होने के कारण, समाज के विविध पक्षों को दिखानें हर पल की घटनाओं को प्रसारित करने में आसानी होती है। यह एक अत्याधुनिक उपकरण होने के कारण इसके माध्यम से सूचनाओं को एक स्थान से

दूसरे स्थान पर पहुँचाना आसान हो गया है तथा घटना स्थल से सीधे आँखों देखा हाल प्रसारित किया जाता है। टेलीविजन पर किसी भी घटना के तत्काल समाचार हमारे सामने होते है। किसी ... में बैठे व्यक्ति से टिप्पणी ली और प्रसारित की जा सकती है।

विभिन्न कम्पनियाँ अपने उत्पादों का विज्ञापन टेलीविजन पर प्रसारित कराते है। टेलीविजन के द्वारा पाठ्य सामग्री, सहायक ... का प्रसारण भी काफी महत्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में उभरकर ... आया। पाठ्यक्रमों के प्रसारण के लिए एक अलग से ऐजुसेट नाम ... उपग्रह भी अंतरिक्ष में स्थापित किया गया जिससे विद्यार्थी, अध्यापक ... शिक्षा सम्बन्धी जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है। कभी-कभी ... कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी विद्यार्थियों की समस्या का समाधान हो ... है। आजकल ऑनलाईन क्लॉस के माध्यम से विद्यार्थी सभी विषय ... सीख सकते है। चैनलों के माध्यम से गीत, वाद्य और नृत्य तीनों ... व्यापक प्रसार हुआ है। इसके माध्यम से संगीत में रुचि न भी होने ... व्यक्ति भी देखकर व सुनकर सहज ही प्रभावित हो जाता है। ... संगीत, लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत की व्यापकता का श्रेय भी दूरदर्शन को एवं विभिन्न चैनल्स को दिया जाता है क्योंकि कई प्रोग्राम ... प्रसारित किए जाते है जिनके माध्यम से लोगो की प्रतिभा को सबके समक्ष प्रस्तुत करवाया जाता है जैसे डांस इंडिया डांस, सा रे गा मा, वॉयस ऑफ इंडिया इत्यादि अनेक कार्यक्रमो के माध्यम से संगीत का व्यापक प्रसार किया जाता है तथा लोक संगीत, लोक नृत्यों को ... उभारा जाता है। इन चैनलो में प्रसारित प्रोग्रामों के माध्यम से अपने देश की सभ्यता संस्कृति का केवल ज्ञान ही प्राप्त नही होता बल्कि दूसरे देशों के बारे में भी जानकारी मिलती है।

हुई नई चमक का दर्शन भी किया था। इससे सिद्ध होता है कि संगीत संचार द्वारा वनस्पतियों पर असर होता है।

संगीत की भाषा स्वर, लय व ताल है। चाहे बोल किसी भाषा में हो इससे कोई अन्तर नही पड़ता। इसलिए संगीत का कोई मजहब नही,

... की एकता का प्रतीक है, संगीत संचार द्वारा विभिन्न जातियों के लोग, भिन्न भाषा बोलने वाले अनेक देशों के लोग एक मंच पर इकट्ठे होकर संगीत का प्रदर्शन करते है तथा आज के तकनीकी युग में एक दूसरे का संगीत इन्टरनेट के माध्यम से सुनते है एवं एक दूसरे के साथ मित्रता ... स्थापित करते है व संगीत संचार द्वारा एक दूसरे की संस्कृति की जानकारी प्राप्त करते है। अतः आज संगीत संचार लोगों को जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. Bandey October 26, 2017
2. संगीत अध्यापन डॉ. श्रीमति ज्योति खन्ना पृ. 91
3. संगीत अक्टूबर-1982, पृ. 54
4. उत्तर भारत में संगीत शिक्षा, पुष्पा कपूर पृ. 28
5. Biography of Tansen By Gyani Pandit, June 26, 2015
6. Music and Communication in Music Psychology, London 20 Sept. 2013
7. संगीत कला विहार, पत्रिका जनवरी 1968 पृ. 82
8. प्रणव भारती, ओंकार नाथ ठाकुर पृ. 22